प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 54 * AUG – SEP 2012 *

AUG :: NA :: Corrupt Files

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Sep 01.MP3	42	⊕	⊕		गीता अ०१३/१-२ : **'क्षेत्र क्षेत्रज्ञ'** २ ही वस्तु हैं, दिखाई देने वाला **क्षेत्र** व इसे जानने वाला **क्षेत्रज्ञ** कहलाता है, यही संपूर्ण ज्ञान है	*1*
2	Sep 02.MP3	27	⊕			भगवान राम द्वारा शबरी को **'नवधा भक्ति'** का उल्लेख, भगवान के **नि०नि०** एवं **स०सा० स्वरूप निरूपण**	क
3	Sep 03.MP3	28	⊕	⊕		**अध्यारोप-अपवाद प्रक्रिया से ब्रह्म निरूपण ::** सृष्टि के आदि में **एक अद्वितीय ब्रह्म** ही था जिससे उत्पन्न हुई छायारूप त्रिगुणात्मिका माया उससे-महत्तत्त्व-अहंतत्त्व-पंचतन्मात्रा-पंचभूत-अखिलं जगत, फिर जिसमें जगत लय होता है वही ब्रह्म है - **तत्त्वमसि**	****
4	Sep 04.MP3	21	⊕	⊕		तैत्रीय उ०-**ब्रह्म निरूपण ::** एक अद्वितीय भगवान ही अपनी इच्छा से लीला के लिये अनेक रूप धारण करते हैं व लीला समाप्त होने पर पुनः एक अकेले ही रह जाते हैं, **एकरूप द्रष्टा भी भगवान हैं व लीला से अनेकरूप दृश्य भी भगवान हैं, भ० ही सत्य हैं**	****
5	Sep 05.MP3	31	⊕			**'नवधा भक्ति'** उल्लेख, **४ प्रकार के भक्त** विवेचना, नि०नि०स्वरूप निरूपण, तरंगरूप जीव और जलरूप ब्रह्म-एकत्वम् - **तत्वमसि**	ख
6	Sep 06.MP3	47	⊕	⊕		**कर्म विकर्म अकर्म** को जानना ही कर्तव्य है क्यों कि कर्म की गति अति गहन है, जो कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्म देखता है उसे कुछ भी करना पाना या जानना शेष नहीं है। वेद विहित कर्म ही कर्म अथवा धर्म है तथा वेद विरुद्ध कर्म विकर्म है	**** 1
7	Sep 07.MP3	29	⊕	चर्तु०भाग०		श्रीमद्भागवत् में भगवान के **निनि०**-ब्रह्म, **सनि०**-ईश्वर/जीव,**ससा० -** विष्णु रूप अवतार एवं मानवादि देह-**इनों का स्वरूप निरूपण**	१
8	Sep 08.MP3	00	⊕	⊕	⊕	प्रवचन अनुपलब्ध	NA
9	Sep 09.MP3	43	⊕	⊕		**कर्म विकर्म अकर्म ::** वेद विहित कर्म ही **कर्म** या धर्म है व निषिद्ध कर्म **विकर्म** है आत्मा में कोई कर्म नहीं है वह **अकर्म** है, सभी कर्म प्रकृति राज्य में हैं, आत्मा में जगत तथा जगत में आत्मा को देखने वाला योगी-ज्ञानी है, उसे अब कुछ पाना शेष नहीं	**** 2
10	Sep 10.MP3	26	⊕	चर्तु०भाग०		भ०विष्णु का ब्रह्मा को रहस्यों व अंगों सहित गुह्यतम ज्ञान का उपदेश =सत्-जा०,असत्-स्व०,परे-सु०,पहले-पश्चात्-**एक मैं ही हूं**	२
11	Sep 11.MP3	40	⊕	⊕		**कर्म विकर्म अकर्म ::** दैवीय सम्पदा कर्म या धर्म व आसुरी सम्पदा विकर्म या अधर्म है **आत्मा अकर्म है** व द्रष्टा साक्षी चेतन मात्र निर्गुण सनातन अपना स्वरूप है। प्रकृति यानि इ० मन बुद्धि में ही सब कर्म हैं, अपने को अकर्म आत्मा देखने वाला ही ज्ञानी है	**** 3
12	Sep 12.MP3	25	⊕	चतुःश्लोकी भागवत्		ब्रह्मा सत्-जा०, असत्-स्व०, परे-सु०,पहले और पश्चात **एक मैं ही हूं,** जो जा०-स्व०-सु० को प्रकाशता है वह ब्रह्म है, जीवात्मा मेरा ही स्वरूप है, आत्मा परमात्मा से अभेद हैं । मेरी दृश्यमान माया मुझे ढके रहती है, मैं ही देखता हूँ किन्तु दिखाई नहीं पड़ता	३ मुख्य
13	Sep 13.MP3	45	⊕	⊕	⊕	गीता अ०१५/१६-२० :: **क्षर,** क्षर की अपेक्षा से **अक्षर** पु० या **कूटस्थ-प्रकृति** तथा द्रष्टा साक्षी **उत्तम पुरुष** परमात्मा का निरूपण	
14	Sep 14.MP3	33	⊕	⊕	⊕	**'नवधा भक्ति' -** पृथ्वी की त्रिवेणी यमुना गंगा सरस्वती की भाँति त्रि० वेद आध्यात्मिक त्रिवेणी है जिसकी कर्म उपासना ज्ञान सरिता संतों के मुख से बहती रहती है व पाप शमन + चित्त एकाग्रता + अपने सच्चिदानंद स्वरूप का ज्ञान कराकर सद्य मुक्ति देती है	ग
15	Sep 15.MP3	47	⊕	⊕	⊕	घट बनाने के लिये**निमित्तकारण** कुम्भकार 'ज्ञान-बुद्धि इच्छा-मन प्रयत्न-इन्द्रिय' तथा **उपादानकारण** माटी आवश्यक हैं जिसका अपने कार्य के कण-कण में प्रवेश होता है,प्रायः दोनों अलग-२ होते हैं पर **भगवान जगत के अभिन्न निमित्तोपादान दोनों कारण** हैं अधिष्ठान बीज-रज्जु रूप कारण भी मैं ही हूँ व अध्यास वृक्ष-सर्प रूप से कार्य भी मैं ही हूँ, यानिकार्य-कारण २नों मैं ही हूँ	विशेष
16	Sep 16.MP3	27	⊕	चर्तु०भाग०		भा०१-१-१ : भ० विष्णु का ब्रह्मा को उपदेश :: माया उपाधि से **सनि० ससा०** एवं सच्चिदानंद **निनि०** इनों का स्वरूप निरूपण	४
17	Sep 17.MP3	51	⊕	⊕	⊕	**चिदाभास की ७ अवज्ञथाऐं :: १ अज्ञान २ आवरण ३ विक्षेप** ४ परोक्षज्ञान ५ अपरोक्षज्ञान ६ शोक निवृत्ति ७ परमानंद की प्राप्ति	अ
18	Sep 18.MP3	25	⊕	चर्तु०भाग०		भा०१-१-१ : भ० विष्णु ब्रह्मा को जिसका उपदेश करते हैं वह भगवान का परमसत्य नि०नि० व्यापक अगोचर निर्विकार रूप है	५
19	Sep 19.MP3	42	⊕	⊕	⊕	**चिदाभास की ७ अवज्ञथाऐं ::** १ अज्ञान २ आवरण ३ विक्षेप **४ परोक्षज्ञान ५ अपरोक्षज्ञान ६ शोक निवृत्ति ७ परमानंद की प्राप्ति**	ब
20	Sep 20.MP3	31	⊕			शबरी के माध्यम से **नवधा भक्ति** का उपदेश, भगवान का निनि०स्वरूप निरूपण, दृश्यमान जगत माया छाया के समान झूठ है	
21	Sep 21.MP3	45	⊕	⊕	⊕	मैत्राहिणी उप० एवं योग वाशिष्ठ में **ज्ञान की ७ भूमिकाएं :- १ शुभेच्छा, २ विचारणा**, ३ तनुमानसी, ४ सत्वापत्ति - ब्रह्मविद्, ५ असनशक्ति - ब्रह्मविदवर, ६ पदार्थभावना - ब्रह्मविदवरीयान, ७ तुरीयग्राह - ब्रह्मविदवरिष्ठ : प्रगाढ निद्रा	विशेष १
22	Sep 22.MP3	29	⊕	⊕		भगवान राम द्वारा शबरी के माध्यम से **'नवधा भक्ति'** का उपदेश :: सम्पूर्ण ::	
23	Sep 23.MP3	38	⊕	⊕	⊕	मैत्राहिणी उप० एवं योग वाशिष्ठ में **ज्ञान की ७ भूमिकाएं:-१ शुभेच्छा, २ विचारणा,३ तनुमानसी,** ४ सत्वापत्ति - ब्रह्मविद, ५ असनशक्ति - ब्रह्मविदवर, ६ पदार्थभावना - ब्रह्मविदवरीयान, ७ तुरीयग्राह - ब्रह्मविदवरिष्ठ : प्रगाढ निद्रा	विशेष २
24	Sep 24.MP3	54	⊕	⊕	⊕	मैत्राहिणी उप० एवं योग वाशिष्ठ में **ज्ञान की ७ भूमिकाएं:- १ शुभेच्छा, २ विचारणा, ३ तनुमानसी, ४ सत्वापत्ति** - ब्रह्मविद, ५ असनशक्ति - ब्रह्मविदवर, ६ पदार्थभावना - ब्रह्मविदवरीयान, ७ तुरीयग्राह - ब्रह्मविदवरिष्ठ : प्रगाढ निद्रा	विशेष ३
25	Sep 25.MP3	49	⊕	⊕	⊕	हृदय में स्थित भ०/आत्मा के दर्शन हेतु कर्म-उपासना-ज्ञान द्वारा मनरूपी दर्पण का मल-विक्षेप-आवरण रहित होना अनिवार्य है **ज्ञान की ७ भूमिकाऐं:-५ असनशक्ति**-ब्रह्मविदवर, **६ पदार्थभावना**-ब्रह्मविदवरीयान, **७ तुरीयग्राह**-ब्रह्मविदवरिष्ठ : प्रगाढ निद्रा	विशेष ४
26	Sep 26.MP3	38	⊕			भगवान के ज्ञान के साधन **४ कृपाओं का संयोग है ::** १ ईश्वरकृपा २ वेदकृपा ३ गुरुकृपा ४ आत्मकृपा	
27	Sep 27.MP3	39	⊕	⊕	⊕	अन्नपूर्णोपनिषद - **पाँच भ्रान्तियाँ :: १ जीव-ईश्वर भेद भ्रान्ति**-दृ०बिम्ब प्रतिबिम्ब २ आत्मा कर्ता भोक्ता भ्रान्ति-दृ०स्फटिक लोहित ३ संग भ्रान्ति-दृ०घटाकाश मठाकाश ४ जगत परमात्मा का विकार-दृ०रज्जु सर्प ५ जगत परमात्मा से भिन्न व सत्य-दृ०स्वर्ण आभूषण	विशेष १
28	Sep 28.MP3	43	⊕	⊕	⊕	**पाँच भ्रान्तियाँ :: अ१ जीव-ईश्वर भेद भ्रान्ति**-दृ०बिम्ब प्रतिबिम्ब, जीवपना + ईश्वरपना दोनों ही ब्रह्म में कल्पित हैं,जीव और ईश्वर दोनों ही प्रतिबिम्ब हैं अतः मिथ्या हैं तथा बिम्ब भी प्रतिबिम्ब की अपेक्षा से है अतः मिथ्या है ब्रह्म ही सत्य हैं **ब्रह्म तथा प्रकृति / माया का स्वरूप निरूपण**	विशेष २
29	Sep 29.MP3	50	⊕	⊕	⊕	**पाँच भ्रान्तियाँ** :: **१ जीव-ईश्वर भेद भ्रान्ति**-दृ०बिम्ब प्रतिबिम्ब, **ईश्वरऔर जीव की सृष्टि**,ब्रह्म सत्य है बिम्ब-प्रतिबिम्ब दोनों नाम कल्पित/मिथ्या हैं, सभी भेद माया के किये होने से मिथ्या हैं **व** और ५ भेद :: १ जीव-ईश्वर २ जीव-जीव दृ०-घटाकाश ३ जीव-जड़ ४ जड़-जड़ ५ ईश्वर-जड़ दृ०-स्वप्न **स** और ३ भेद :: सजातीय २ विजातीय ३ स्वगत भेद	विशेष ३
30	Sep 30.MP3	40	⊕	⊕	⊕	**पाँच भ्रान्तियाँ** :: **१ भेद भ्रान्ति** :: झूठ को ही भ्रान्ति को कहते हैं, ये जगत जो वस्तुतः है नहीं किन्तु सतघन चितघन आत्मा रूपी दर्पण में छाया चित्र की भाँति दिखाई देता है, आत्मा द्रष्टा भी है और दर्पण भी, तीनों काल में न होते हुए भी तरंगें दिखाई देती हैं पर जल ही सत्य है, ब्रह्म-जीव-जगत-ईश्वर में अभेद दर्शन ही ज्ञान है, सब ब्रह्म ही है, **अभेद ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है** ।	विशेष ४
31	Sep 31.MP3	37	⊕	⊕	⊕	**पाँच भ्रान्तियाँ** :: **१ भेद भ्रान्ति**-दृ०बिम्ब प्रतिबिम्ब २ **कर्ता भोक्ता भ्रान्ति** - दृ०स्फटिक लोहित **३ संग भ्रान्ति** - दृ०घटाकाश महाकाश **४ जगत परमात्मा का विकार है** - दृ०रज्जु सर्प **५ जगत अपने कारण रूप परमात्मा से भिन्न व सत्य है** - दृ०स्वर्ण आभूषण	विशेष ५
32	Sep 32.MP3	51	⊕	⊕	⊕	सरस्वती उ० **:: संसार में ५ अंश हैं ::** १.अस्ति २ भाँति ३ प्रिय - **ब्रह्म रूप**, ४ नाम ५ रूप - **जगत रूप**	मुख्य
33	Sep 33.MP3	30	⊕			आनंद रामायण - मनोहरकाण्ड :: **'श्रीराम जय राम जय जय राम'** मंत्र की व्याख्या एवं महिमा	
34	Sep 34.MP3	48	⊕	ब्रह्मोपनिषद भाग १		सृष्टि के आदि में अद्वितीय **सच्चि०ब्रह्म** - पुरुष की छायारूप **महामाया**/अव्यक्त/अविद्या/त्रिगुणात्मिका - महत्तत्त्व/**समष्टि बुद्धि** - अहंतत्त्व/**समष्टि मन** या अहंकार - **पंचतन्मात्राएं - पंचमहाभूत - अखिल जगत** :: स्त्री-पुरुष पशु-पक्षी देवी-देवता वृक्ष आदि	विशेष
35	Sep 35.MP3	34	⊕			हनुमानजी की भ० राम से उनके नि०नि० स्वरूप जानने की प्रार्थना, **गरुड़जी के संशय की कथा**, कागभुशुंडी प्रसंग का उल्लेख	

36	Sep 36.MP3	53		ब्रह्मोपनिषद भाग २		पंचीकृत पंचभूत-२५ तत्त्वकृत **स्थूलशरीर** एवं पंचतन्मात्राकृत १६ तत्त्व की **सूक्ष्मशरीर संरचना**, अन्न सर्वाधिक मूल्यवान, **कर्म के ५ हेतु**-१अधिष्ठान-शरीर २कर्ता-साभास बुद्धि ३करण-इन्द्रियाँ ४चेष्टा-प्राण ५अनुग्राहक देवता, **आत्मा-अकर्म द्रष्टा साक्षी मात्र है**	विशेष
37	Sep 37.MP3	34				सीताजी द्वारा भ० राम का निनि० स्वरूप निरूपण, **गरुड़जी का संशय प्रकरण**, गरुड़-मच्छर कथा, **गरुड़-कागभुशुंडी प्रसंग**	
38	Sep 38.MP3	34		ब्रह्मोपनिषद भाग ३		**:: सृष्टिक्रम :: पंचभूत पंचीकरण**/२५ तत्त्वों का **स्थूल शरीर** :: **पृथ्वी**-अस्थि चर्म नाड़ी रोम माँस, **जल**-मूत्र श्लेष्म रक्त शुक्र स्वेद, **वायु**-हाथ पैर आँख आदि अंगों का चलना, **अग्नि**-क्षुधा त्रिषा आलस्य मोह मैथुन, **आकाश**-काम क्रोध लोभ मोह भय अपंचीकृत **पंचभूतों से** १६ तत्त्वों का **सूक्ष्म शरीर :: ५ ज्ञानेन्द्रियाँ - आकाश**-शब्द, **वायु**-स्पर्श, **अग्नि**-रूप, **जल**-रस, **पृथ्वी**-गंध, **५ कर्मेन्द्रियाँ - आकाश**-वाक, **वायु**-पाणि, **अग्नि**-पाद, **जल**-उपस्थ, **पृथ्वी**-पायु, **पाँच प्राण**- प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान **+ चतुष्अन्तः करण - अग्नि**-बुद्धि, **वायु**-मन, **जल**-चित्त, **अहंकार**-पृथ्वी :: **कारण शरीर**- जीव को अपने स्वरूप का अज्ञान	विशेष
39	Sep 39.MP3	30				अध्यात्म रामायण-प्रथम सर्ग-राम हृदय **::** सीताजी द्वारा **भगवान राम का निनि० सच्चि० स्वरूप निरूपण** :: **'रामं विद्धि परम् ब्रह्मं सच्चिदानन्द अद्वयं'**, जगत के ५ प्रकाश परप्रकाशित हैं किन्तु राम स्वप्रकाश ज्ञान है, ईश्वर एवं जीव का परमार्थ स्वरूप एक ही है	
40	Sep 40.MP3	38				सामवेद : छा०उ० : ७तवाँ अ० :: **नारद सनतकुमार सम्वाद**, सनतकुमार के पूछने पर नारद ने अपनी **१८ विद्याओं** के अध्ययन का उल्लेख कर कहा कि मैं अपनी आत्मा को नहीं जानता अतः मुझे आत्म ज्ञान देकर जन्म-मरण के शोक सागर से उबारिये	भाग १
		00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA